Bihar Board Class 7 Social Science Civics Notes
Chapter 9 बाजार श्रृंखला खरीदने और बेचने की कड़ियाँ

पाठ का सार संक्षेप

किसी भी वस्तु को उसके उत्पादक से उपभोक्ता तक पहुँचने में बहत-सी – कड़ियों से गुजरना पड़ता है। ये कड़ियाँ कैसे बनती है ? और इन कड़ियों से जुड़े लोगों को एक सा लाभ प्राप्त हो पाता है ? इस अध्याय में हम इन्हीं बातों को समझने की कोशिश करेंगे मखाना की उपज, किसान तथा बाजार की श्रृंखला के उदाहरण द्वारा।"

मखाना – मखाना की खेती तालाब में की जाती है। इसकी खेती प्रायः मछुआरों द्वारा की जाती है। तालाबों का 60 प्रतिशत हिस्सा सरकार का तथा 40 प्रतिशत हिस्सा निजी व्यक्तियों का होता है। मखाना की खेती के ये तालाब मछुआरों द्वारा बनाई गई सहकारी समितियों को तीन से सात साल के लिए एक निश्चित लगान पर दी जाती है। मखना की खेती हर कोई नहीं कर सकता है। क्योंकि मखाना के उत्पादन एवं उसका लावा बनाने में जिस कुशलता की आवश्यकता होती है, वह मछुआरों के एक खास समूह में पायी जाती है।

पटना के बाजार – कुछ व्यापारी आढ़तियों से मखाना खरीदकर शहरों के थोक मंडी में बेचते हैं। फिर किसी दूसरे शहर के व्यापारी इन मंडियों से मखाना खरीदकर ले जाते हैं। इस क्रम में वे खरीदे गए मखाने का मूल्य, परिवहन का खर्च तथा पैकिंग का खर्च सभी जोड़ लेते हैं और अपने शहर की थोक मंडियों में वे 10 रु. प्रति किलो के लाभ पर बेचता है।

थोक विक्रेता बड़ी मात्रा में खरीद-बिक्री करता है इसलिए वह अधिक कमा लेता है। खुदरा व्यापारी प्रति किलो 30 से 40 रु. लाभ पर बेचता है। इस प्रकार शहरी उपभोक्ता को मिलने तक उसकी कीमत अधिक हो जाती है। इससे हमें पता चलता है कि किसानों को सबसे अधिक मेहनत करने के बावजूद उचित लाभ नहीं मिल पाता।

https://www.evidyarthi.in/